International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 12, Issue 3, March 2025
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar
Shri Vishwakarma Skill University,
Palwal Haryana

भूमिका

विद्यालय में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का सीधा संबंध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला एक पथ-प्रदर्शक होता है। शिक्षक न केवल कक्षा में, अपितु विद्यालय में भी उचित वातावरण का निर्माण करता है। वह सभी बालकों के प्रति उदार, पक्षपात-रहित व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता है। बालकों की सभी समस्याओं को हल करने में सूझबूझ से काम लेता है।

शिक्षक बालकों की योग्यता, क्षमता, रुचि एवं अभिरुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं एवं प्रकृति के अनुसार शिक्षक शिक्षण पद्धति अपनाता है। विद्यालय में किसी भी क्रिया को सिखाने का दायित्व शिक्षक का होता है। वह छात्रों में ज्ञान एवं क्रियात्मक अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण तैयार करता है। बालकों के मानसिक तनावों को दूर करता है तथा उनमें वांछित और अच्छी आदतों का निर्माण करता है।

चूँकि छात्र शिक्षक को आदर्श मानता है, इसलिए छात्रों में अध्ययनशीलता, ईमानदारी तथा कार्य के प्रति प्रतिबद्धता जैसे गुणों के विकास का दायित्व भी शिक्षक पर होता है। साथ ही वह छात्रों की अभिरुचि एवं क्षमताओं के अनुरूप उनके भविष्य के क्षेत्रों—प्रशासनिक, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक—का निर्धारण करने में सहायक होता है। इस प्रकार शिक्षक न केवल सकारात्मक सोच वाले नागरिकों का निर्माण करता है, बल्कि समाज और देश की दिशा-दशा को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

उपरोक्त शिक्षक के कर्तव्यों एवं दायित्वों का समर्पित रूप से निर्वहन उसकी अभिक्षमता एवं संतुष्टि पर निर्भर करता है। विद्यालय के तीन आधारभूत अंग हैं—शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम। बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षक को अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर निर्जीव होता है, उसी प्रकार शिक्षक ही विद्यालय का जीवनदाता है।

जिस प्रकार विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उसी प्रकार शिक्षक के लिए उसका व्यक्तित्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

व्यक्तित्व

आधुनिक काल में 'व्यक्तित्व' शब्द चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। शिक्षा के क्षेत्र में समस्त शैक्षणिक क्रियाओं का केंद्र-बिंदु 'व्यक्तित्व' ही माना जाता है। शिक्षा का उद्देश्य ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। मनोवैज्ञानिक भी व्यक्तित्व के अध्ययन के माध्यम से व्यक्ति के समग्र स्वरूप को समझते हैं।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मनुष्य की कोई भी शारीरिक या मानसिक क्रिया व्यक्तित्व से पृथक नहीं है। शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है और व्यवहार व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है, वैसा ही उसका व्यक्तित्व प्रकट होता है। अतः प्रत्येक समाज एवं विद्यालय बालकों के समुचित विकास में रुचि लेता है।

व्यक्तित्व का समुचित विकास योग्यता एवं समायोजन की क्षमता को सुदृढ़ करता है। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्न हैं—

1- व्यक्ति का आंतरिक एवं बाह्य वातावरण उसकी सोच एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।
2- व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उसके जीवन एवं व्यवसाय में संतुष्टि को प्रभावित करता है।
3- व्यक्ति की आर्थिक स्थिति तथा उसके घर और विद्यालय के बीच की दूरी भी उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है।
4- व्यक्ति के आनुवंशिक गुण, शिक्षा तथा सामाजिक वातावरण भी व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
5- समायोजन एक अच्छे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है; जो व्यक्ति परिस्थितियों के साथ समायोजन कर लेता है, वह अपने जीवन और व्यवसाय में अधिक संतुष्ट रहता है।

शिक्षक के गुण

एक अच्छा शिक्षक अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होता है। उसमें निदान करने की क्षमता, आपसी सहयोग की भावना, अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा, प्रभावशाली व्यक्तित्व, साधन जुटाने की क्षमता तथा राष्ट्र-प्रेम जैसे गुण होते हैं।

शिक्षक की समाज-निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक शिक्षा का सूत्रधार है। उसके व्यक्तित्व का बालकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है और वही उनके भावी जीवन की नींव रखता है। कहा जाता है कि समाज में अध्यापक का दर्जा उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक लोकाचार को प्रतिबिम्बित करता है। शिक्षक के पूरे व्यक्तित्व के प्रभाव को जानने से पहले हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि आज के समय में शिक्षक की स्थिति क्या है और उस पर किन-किन बाहरी तत्वों का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक की स्थिति – प्राचीन काल में शिक्षा का उच्च स्थान था। समाज उन्हें आदर की दृष्टि से देखता था। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और परम ब्रह्म की संज्ञा दी जाती थी। गुरु और शिष्य में घनिष्ठ संबंध होते थे। उस समय गुरुकुल की व्यवस्था प्रचलित थी। राजघरानों के राजकुमार भी गुरु आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने आते थे और बदले में गुरु दक्षिणा के रूप में अनाज, गाय, वस्त्र, जमीन आदि देते थे।

लेकिन अब समय बदल चुका है। समाज के लोग अत्यंत ही व्यक्तिवादी हो गए हैं। राष्ट्रीय चेतना और भावात्मकता का अभाव है। शिक्षक की स्थिति भी कुछ बिगड़ती नजर आ रही है और उस पर अनेक तत्वों का प्रभाव पड़ रहा है। समाज की उपेक्षा ने उसे अपने कर्तव्यों से विचलित कर दिया है। हम मान सकते हैं कि शिक्षक का स्तर पहले की अपेक्षा कुछ गिरा है, तथापि शिक्षक व्यवसाय आज भी सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता है। आज भी माता-पिता तथा छात्र शिक्षक का सम्मान करते हैं। आज भी शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। देश के करोड़ों इंजीनियर, डॉक्टर और देश पर जान न्योछावर करने वाले सैनिक शिक्षक की ही देन हैं। पर देखना यह है कि इतना समझने के बावजूद महिला शिक्षक अपनी अन्य जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट हैं या नहीं।

अध्ययन की आवश्यकता

महिला शिक्षा की यदि बात की जाए, तो पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा उनके जीवन में अनेक समस्याएँ होती हैं, जो उन्हें अपने जीवन में व्यवसाय के साथ-साथ प्रभावित करती हैं। उदाहरण के तौर पर, महिला शिक्षक के पास छोटा बच्चा होना, विद्यालय से घर की दूरी अधिक होना, परिवार का वातावरण शांतिपूर्ण न होना, महिला शिक्षक का मानसिक या शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न होना, विद्यालय के मुख्याध्यापक या अन्य साथी अध्यापकों का व्यवहार ठीक न होना आदि।

परंतु इन सभी समस्याओं के बाद भी महिला शिक्षक एक अच्छे शिक्षक के गुणों को धारण करते हुए अपने व्यवसाय से किस प्रकार संतुष्ट रह पाती हैं, या फिर ये समस्याएँ उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं अथवा नहीं—इन प्रश्नों के उत्तर जानने तथा समाधान निकालने के प्रयास हेतु अध्ययनकर्ता ने इस विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

“महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन”

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1. **शिक्षक** – जो अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पित हो, जनसेवा के लिए तत्पर रहता हो, कुशल, ज्ञानी, अनुभवी तथा अपने अध्यापन के प्रति समर्पित, सदाचारी व निष्ठावान हो।
2. **व्यवसाय** – वे सभी क्रियाएँ जो मनुष्य अपने जीवन-यापन तथा आय-व्यय के लिए करता है।
3. **संतुष्टि** – व्यक्ति के जीवन में उसकी इच्छाओं का तृप्त होना ही संतुष्टि कहलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी स्कूलों में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
2. गैर-सरकारी स्कूलों में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
3. ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
4. ग्रामीण क्षेत्रों के गैर-सरकारी स्कूलों में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
5. शहरी क्षेत्रों में सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
6. शहरी क्षेत्रों में गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
7. ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी तथा गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
8. शहरी क्षेत्रों में सरकारी तथा गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
9. सरकारी विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।
10. गैर-सरकारी विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शहरी क्षेत्रों में सरकारी तथा गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. शहरी एवं ग्रामीण गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. यह अध्ययन केवल फतेहाबाद जिले तक सीमित रखा गया है।
2. यह अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों तक सीमित है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि

महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है, क्योंकि इस विधि में न तो स्वतंत्र चर और न ही परतंत्र चर में कोई परिवर्तन किया जाता है, बल्कि यथास्थिति में चरों के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या

इस अध्ययन में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव जानने के लिए फतेहाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की 200 महिला शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त नमूना (न्यादर्श)

इस अध्ययन में कुल 200 महिला शिक्षकों को नमूने के रूप में लिया गया है, जिनमें—

- 100 ग्रामीण विद्यालयों से (50 सरकारी एवं 50 गैर-सरकारी)
- 100 शहरी विद्यालयों से (50 सरकारी एवं 50 गैर-सरकारी)

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत प्रश्नावलियों का उपयोग किया गया। महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व को मापने के लिए डी.जे.एस.एस. प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जो कि डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा बनाई गई है तथा महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव को जानने के लिए मापनी के रूप में एन.आई.ई.आई. प्रश्नावली, जो कि डॉ. प्रभा भाटिया एवं डॉ. गीता कपूर द्वारा निर्मित है, का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा स्थायी द्वि-समूह तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली

महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव के अध्ययन को मापने के लिए मानकीकृत प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया। इसमें महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व को मापने के लिए डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित डी.जे.एस.एस. प्रश्नावली तथा व्यावसायिक संतुष्टि को मापने के लिए डॉ. प्रभा भाटिया एवं डॉ. गीता कपूर द्वारा निर्मित एन.आई.ई.आई. प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़े

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा आंकड़ों के संग्रह के लिए मानकीकृत प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया। प्रश्नावलियों से प्राप्त आंकड़े समान-अंतराल (interval) प्रकार के हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय पद्धतियों का प्रयोग किया गया:

(1) माध्य (Mean):सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर के अध्यापकों के अपने व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण को जानने के लिए प्रश्नावली से प्राप्त अंकों का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य किसी भी मानों के समूह के योग को कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

(2) मानक विचलन (Standard Deviation):प्राप्त अंकों का उनके औसत से विचलन जानने के लिए मानक विचलन का प्रयोग किया गया। इसे औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है।

(3) 't' परीक्षण (t-test):दो समूहों के मध्य अंतर की तुलना करने के लिए t-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

अनुसंधान के परिणाम:

1. सरकारी विद्यालयों की 100 महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 40.12 तथा मानक विचलन 2.81 पाया गया। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 38.12 तथा मानक विचलन 2.71 पाया गया। दोनों स्तर उच्च पाए गए।

2. गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 40.42 तथा मानक विचलन 2.81 पाया गया, जो उच्च स्तर को दर्शाता है। व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 34.23 तथा मानक विचलन 2.62 पाया गया, जो सामान्य स्तर को दर्शाता है।

3. ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 45.13 तथा मानक विचलन 2.91 पाया गया, जो उच्च स्तर को दर्शाता है। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 44.12 तथा मानक विचलन 2.50 पाया गया, जो अति उच्च स्तर का है।

4. गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 30.56 तथा मानक विचलन 2.92 पाया गया, जो सामान्य स्तर को दर्शाता है। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 29.84 तथा मानक विचलन 2.74 पाया गया, जो सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।

5. शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 48.12 तथा मानक विचलन 3.12 पाया गया, जो उच्च स्तर को दर्शाता है। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 43.15 तथा मानक विचलन 3.15 पाया गया, जो उच्च स्तर को दर्शाता है।

6. शहरी क्षेत्र के गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 40.02 तथा मानक विचलन 2.81 पाया गया, जो मध्यम स्तर को दर्शाता है। उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान 38.61 तथा मानक विचलन 2.62 पाया गया, जो सामान्य स्तर को दर्शाता है।

7. सरकारी एवं गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि t का मान 0.845 है, जो सारणी मान 1.96 से कम है। अतः दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी एवं गैर-सरकारी महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन में t का मान 38.50 पाया गया, जो सारणी मान 1.96 से अधिक है। अतः दोनों में सार्थक अंतर पाया गया।

9. शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों तथा गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन में विचलन 3.12 पाया गया, जबकि शहरी क्षेत्र की गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 40.12 तथा प्रमाणिक विचलन 2.81 पाया गया। इनका t का मान 19.138 है, जो कि सारणी मान 1.96 से अधिक है। अतः महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया।

10. शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों तथा गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का मध्यमान 49.10 तथा प्रमाणिक विचलन 3.15 है, जबकि गैर-सरकारी विद्यालयों का मध्यमान 38.61 तथा प्रमाणिक विचलन 2.68 पाया गया। सारणी में t का मान 26.22 पाया गया, जो कि सारणी मान 1.96 से अधिक है। इसलिए शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष:

महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व पर व्यवसायिक संतुष्टि के प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर अध्ययनकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि ग्रामीण क्षेत्र की सरकारी महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व उच्च स्तर का है, क्योंकि उन्हें सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं वेतनमान अधिक प्राप्त होता है। यह उनके व्यक्तित्व में स्थिरता एवं निखार लाकर उनकी व्यवसायिक संतुष्टि को बनाए रखता है।

यद्यपि महिला शिक्षकों के सामने अनेक कठिनाइयाँ एवं परेशानियाँ आती हैं, तथापि उनकी सामंजस्य क्षमता तथा सरकार के सहयोग के कारण उनका व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि उच्च स्तर की पाई गई है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के गैर-सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि निम्न स्तर की पाई गई, क्योंकि उन्हें कम वेतन मिलता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों की रूढ़िवादी सोच भी उनके व्यवसाय को प्रभावित करती है।

अध्ययन के आधार पर शहरी क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि अत्यंत उच्च स्तर की पाई गई, जबकि शहरी क्षेत्र की गैर-सरकारी महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि सामान्य स्तर की पाई गई।

अतः अध्ययनकर्ता 99% विश्वास के साथ इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि वर्तमान समय में महिलाओं की आर्थिक स्थिति उनके व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि को प्रभावित करती है। आर्थिक रूप से सशक्त होने पर उनके व्यक्तित्व में निखार आता है तथा वे जीवन की कठिनाइयों का बेहतर सामंजस्य कर पाती हैं। इसके विपरीत, यदि आर्थिक स्थिति कमजोर हो और कार्य के अनुसार संतोषजनक वेतन न मिले, तो व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा संतुष्टि स्तर प्रभावित होता है।

इसलिए गैर-सरकारी क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। विशेष रूप से वेतनमान एवं कार्य-परिस्थितियों में सुधार आवश्यक है। साथ ही, गैर-सरकारी महिला शिक्षकों को भी अपने व्यक्तित्व एवं शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करनी चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ने से उनकी व्यवसायिक संतुष्टि में भी वृद्धि होगी।

यदि शिक्षक असंतुष्ट है, तो वह छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं कर सकता। शिक्षक की संतुष्टि एवं व्यक्तित्व का सीधा संबंध शिक्षण की गुणवत्ता से है।

सुझाव:

1. इस अध्ययन में महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया है; पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
2. हरियाणा राज्य के महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
3. नवोदय विद्यालयों एवं केंद्रीय विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अध्यापकों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जा सकता है।
5. उच्च स्तर के अध्यापकों के व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
6. यह अध्ययन नए शोधकर्ताओं के लिए आधार के रूप में उपयोगी हो सकता है।
7. इसे एम.फिल. एवं पीएच.डी. स्तर के शोध के लिए उपयोग किया जा सकता है।
8. दो जिलों के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी इसका विस्तार किया जा सकता है।
9. आरोही विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
10. केंद्रीय विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व एवं व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ:

1. यह अध्ययन सरकारी एवं गैर-सरकारी महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व को समझने एवं उसमें सुधार करने में सहायक है।
2. यह अध्ययन उनकी व्यवसायिक संतुष्टि को समझने एवं उसमें सुधार हेतु उपयोगी है।
3. इसके आधार पर पुरुष अध्यापकों के व्यक्तित्व में भी सुधार किया जा सकता है।
4. यह अध्ययन पुरुष अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि के अध्ययन में सहायक है।
5. शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थी-अध्यापकों के लिए यह अध्ययन उपयोगी है।
6. यह अध्ययन सरकार एवं गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं के लिए भी उपयोगी है।
7. अभिभावकों के लिए भी यह अध्यापकों के व्यक्तित्व को समझने में सहायक है।
8. यह नए शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में उपयोगी है।